ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 505-508
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. वेदप्रकाश भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा.

2. डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद सुमन
निर्देशक, सह प्राचार्य, हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा.

Corresponding Author :

वेदप्रकाश भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा.

काशी के कबीर और काशी में चौथीराम यादव

कबीर भक्ति काल के निर्गुण धारा के कवि हैं, जो हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। कबीर युग द्दष्टा कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। मध्य युग में कबीर अपने वाणी से जो अलग जगाया वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। कबीर अपने युग में धार्मिक पाखंड, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास आदि चरम पर था। उस समय हताश-निराश जनता मंत्र, योग, जात-पात, छुआछूत सामंतशाही, दमन-शोषण से त्रस्त थी। कवि ने इन सभी रूपों चिन्हित किया और उन्होंने जो समाज में देखा, भोगा और सहा उसी की अभिव्यक्ति अपनी वाणी से किया। कबीर अपने वाणी से धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक मुक्ति के प्रश्न के रूप को उठाया। अपेक्षित और प्रताड़ित वर्ग में आत्म सम्मान की भावना को भी जागाई और वैचारिक संघर्ष को जन्म दिया। जिस काशी में कबीर ने अपना सारा जीवन निर्वाह किया, उसी काशी में चौथीराम यादव ने उसी कबीरी मिजाज के साथ जिया और प्रस्तुत किया। चौथीराम यादव को भी लोक की ही चिंता रही। ऐसा व्यक्ति विरले ही पैदा होते हैं। समता, स्वतंत्रता और भाईचारा, सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं साहित्यिक सांस्कृतिक विसंगतियों के खिलाफ कबीर और चौथीराम यादव दोनों ने जनवादी लोग जागरण का अलख जगाया और परचम लहराया।

बीज शब्द : कबीर, लोकपक्ष, लोक, शास्त्र, जाति-प्रथा, ब्राह्मणवाद, सामंत, समाज।

काशी के कबीर को काशी में रहने वाले चौथीराम यादव ने जिस कबीरी मिजाज के साथ जिया और प्रस्तुत किया, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। समाज, साहित्य और संस्कृति के लिए बहुत सक्रिय और फिक्रमंद लोकपक्षीय आलोचक हैं चौथीराम यादव। उनके जैसा व्यक्तित्व समाज में विरले ही पैदा होते हैं। साहित्य में शास्त्र के बरक्स लोक की चिंता करने वाले लोकपक्षीय चेतना के आलोचक का नाम है चौथीराम यादव। जौनपुर जनपद में पैदा होने वाले चौथीराम यादव आजीवन काशी के कबीर तक के सफर में रहे। जौनपुर में माध्यमिक तक की

शिक्षा प्राप्त करने के बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से उन्होंने उच्चतर शिक्षा प्राप्त की और तथा पूरे देश में घूम-घूम कर कबीर की तरह जनवादी लोक जागरण का अलख जगाया। समाजार्थिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक सांस्कृतिक विसंगतियों के खिलाफ उन्होंने जनवादी लोक जागरण का परचम लहराया।

हिंदी के भक्ति आंदोलन के संबंध में उन्होंने लिखा है कि हिंदी भक्ति-आंदोलन दो भागों में विभक्त है एक सगुण और दूसरा निर्गुण। सगुण परंपरा शास्त्रीय परंपरा है और दूसरी निर्गुण परंपरा है यह निर्गुण लोक की परंपरा है। **"हिन्दी भक्ति आंदोलन दो भागों में कैसे और क्यों विभक्त हो गया? रामानंद की वैष्णव धारा कबीर और तुलसी में अलग-अलग रूप क्यों ग्रहण कर लेती है? आरंभ का संघर्षशील स्वर रक्षा के स्वर में क्यों परिवर्तित हो गया? इस अंतर्विरोध की सच्चाई पर पर्दा डालकर भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य का सही मूल्यांकन कर पाना कठिन है।""1** हजारी प्रसाद द्विवेदी के इतिहास ग्रंथों और कबीर, नाथ संप्रदाय, मध्यकालीन धर्म साधना, सुर साहित्य जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकों के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी पक्षधरता लोकधर्मी सिद्धों, नाथों, संतों-सूफियों और सूर के प्रति अधिक है। तुलसीदास की लोकधर्मी भक्ति और उनके साहित्य के वे प्रशंसक हैं किन्तु उनकी विचारधारा के प्रति तटस्थ। उनकी दृष्टि में तुलसीदास **"लोक में वर्णाश्रम-व्यवस्था के पक्के समर्थक थे, पर उपासना के क्षेत्र में जात-पांत की मर्यादा को व्यर्थ समझते थे।"2** निर्गुणिया संतो का विरोध करने वाली शक्तियों को आड़े हाथों लेते हुए उन्होंने यह भी लिखा है कि **"निर्गुण आंदोलन का विरोध करने वाली जो शक्तियां थीं, उनमें से एक का नेतृत्व हिंदू सांप्रदायिकता ने किया तो मुसलमान ने कुछ दूर तक साथ दिया। दूसरे का विरोध मुस्लिम संप्रदाय ने किया तो हिंदुओं ने प्रायः अपनी उदासीनता दिखायी। इसमें कहना यह है कि इन दोनों का विरोध करने वाले मुख्यतः हिंदू-मुस्लिम पुरोहित और सामंत रहे हैं। पश्चिमोत्तर से लेकर उत्तर भारत तक फैली हुई कबीर, जायसी, नामदेव, तुकाराम आदि की जाति-धर्म निरपेक्ष संत परंपरा के साथ दिखाई पड़ता हैं।"3** मध्यकालीन लोक जागरण की क्रांति के दूत कबीर की याद सहसा ताजा हो जाती है। लगभग सवा छः सौ साल पूर्व के कबीर और जो लगभग 133 वर्ष पूर्व पैदा हुई अंबेडकर की चिंता थी और उन्ही दोनों महान चिंतकों की चिंता से आप्लावित चौथिराम यादव कबीर एवं अंबेडकर को आजीवन जीते रहे तथा प्रस्तुत करते रहे। जैसा कि कबीर ने कहा है कि- "सुखिया सब संसार है खावे और सोवे /दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे।"

चौथीराम यादव कि दृष्टि में कबीर और अंबेडकर का दुःख एक ही है दोनों में समाज बदलने की चिंता एक जैसी ही है। खाए- पीए-अघाए लोगों को कबीर और अंबेडकर के दुःख एवं चिंता से कुछ भी लेना- देना नहीं है। वह खराटे मारकर सुख की नींद सो रहा है। जो लोग भूखे, नंगे और बेघर हैं उनकी चिंता सिर्फ और सिर्फ कबीर, अंबेडकर के साथ-साथ चौथीराम यादव जैसे आलोचक के पास है।

अपनी पुस्तक 'उत्तर शती के विमर्श और हाशिये का समाज' चौथीराम यादव ने स्पष्ट लिखा है कि "**हिंदी साहित्य का आरंभ ही दलित चेतना को अभिव्यक्त करने वाले साहित्य के माध्यम से होता है। सिद्धों, नाथों और निर्गुण संतों का साहित्य दलित साहित्य की पृष्ठभूमि है जिसके सामाजिक चिंतन पर बौद्ध दार्शनिकों के सामाजिक चिंतन पकी तार्किक प्रणाली का गहरा प्रभाव है। सरहपाद, गोरखनाथ, कबीर और रैदास जात-पांत ग्रस्त ब्राह्मणवादी व्यवस्था और श्रेष्ठता के अहंकार पर उसी प्रकार प्रहार करते हैं जिस प्रकार बौद्ध दार्शनिकों ने किया था।"4**

कबीर ब्राह्मणवादी, सामंती व्यवस्था के खिलाफ जन-जागरण के क्रांतिकारी कवि है। आधुनिक युग में कबीर की इस विरासत को पूरी प्रखरता के साथ आगे बढ़ाते हैं चौथीराम यादव। कबीर और चौथीराम यादव व्यवस्था परिवर्तन के शीर्षस्थ योद्धा हैं। कबीर ने अपने समय में जिस ब्राह्मणवादी, सामंती सत्ता, संस्कृति को सर से कफन बांधकर खुली चुनौती दी थी। उस काम को आलोचक चौथीराम यादव भी अपने समय में कबीरी मिजाज के साथ आगे बढ़ाने का

अथक प्रयास किया है।

समकालीन हिंदी कविता के मुख्य हस्ताक्षर दिनेश कुशवाह ने ठीक ही लिखा है कि **"कबीर कवि होने के प्रकाष्ठा है। मनुष्य होने की मिसाल है। फिर भी उन्हें पांच सौ साल तक कवि नहीं माना इस देश के बुद्धिजीवियों ने। पूछने का मन होता है पार्टनर तुमरी पॉलिटिक्स क्या है?"5**

आलोचक चौथीराम यादव भी लंबे समय तक कबीर की कि गई उपेक्षा से आहत है, और उपेक्षा करने वालों की पॉलिटिक्स बखूबी जानते हैं। इसलिए भारत में रविंद्र नाथ टैगोर, हजारी प्रसाद द्विवेदी नामवर सिंह सरीखे आलोचकों एवं मुक्तिबोध तथा नागार्जुन की तरह कबीर को अपना परम गुरु मानते हैं और उन्होंने अपनी जीवन में साधते भी हैं। अपनी प्रमुख आलोचनात्मक पुस्तकें -लोक जागरण के सूत्रधार, उत्तरशती के विमर्श और हाशिये का समाज, लोक और वेद आमने-सामने, आधुनिकता के लोक पक्ष और साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी समग्र पुनरावलोकन, लोकधार्मी साहित्य की दूसरी धारा, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और छायावादी काव्य आदि में बारं-बार कबीर को स्मरण करते हुए उनके काव्य विवेक पर प्रकाश डाला है। **"संतुलित विवेक और समेकित दृष्टि कबीर की सामाजिक आलोचना की खास पहचान और उनकी धर्मनिरपेक्ष आधुनिक की परिचायक है।"6**

चौथीराम यादव सरहपा और कबीर दोनों को क्रांतिकारी कवि के रूप में देखते हैं। कबीर के रहस्यवाद को खारिज कर दिया है आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने। जबकि कबीर को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जगह दिया है हिंदी साहित्य में। बुद्ध, रैदास और कबीर ने पहले ही सामाजिक सांप्रदायिकता, जाति-प्रथा का विरोध किया है साथ ही वर्ण-व्यवस्था, ब्राह्मणवादी व्यवस्था का भी विरोध कबीर ने किया है। कबीर सच को सच और झूठ को झूठ कहते हैं। कबीर आज सत्ता के बराबर नरसंहार के दौर में हमें प्रतिरोध के संघर्ष को तेज करने का ताकत देता है। अपने समय के दमन कार्य और तानाशाही सत्ता के खिलाफ जान को जोखिम में डालकर संघर्ष करने वाले जन योद्धा रहे हैं। कबीर अपनी बात आंखन देखी करते हैं जो झूठ, मिथ्या का पर्दाफाश करते हैं- "**मैं कहता हौं आंखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।"7** कबीर अपने अनुभव को तर्क और सत्य की कसौटी पर कसकर ज्ञान अर्जित करते हैं और कहते हैं। सामाजिक चिंतन और लोक जागरण जिस ज्ञान के केंद्र में है वही कबीर के नजर में वही सच्चा ज्ञान भी है। कबीर सच को सच और झूठ को झूठ कहा है और हमारे भीतर भी वो सच कहने की हिम्मत दी है जो उसका नाम है।

कबीर के इंकलाबी काव्य विवेक और व्यक्तित्व के बारे में ब्राह्मणवादी आलोचकों से लेकर कबीर के तथा कथित अनुयायियों तक ने तरह-तरह की किंब बदंतियां फैलाई है और ब्राह्मणीकरण करने का भरपूर प्रयास किया है। आलोचक चौथीराम यादव ने इन तमाम किंबबदंतियों एवं ब्राह्मणीकरण का भंडाफोड़ करते हुए कबीर को अपने असली रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। जैसा कि आज तक कुछ आलोचक कबीर के पढ़े-लिखे होने का प्रमाण पत्र बांटते हैं जबकि कबीर ने अपने बारे में स्वयं ही कहा है। "मसी कागद छुयों नहीं,कलम गहयों नहीं हाथ।"

चौथीराम यादव कबीर के इस कथन की प्रमाणिकता को पुष्ट करते हुए लिखते हैं कि **"कबीर जैसे दलितों के लिए वेद और शास्त्र के दरवाजे खुले ही कब थे? इसलिए कबीर ने समाज में जो देखा और सुना सत्संग से सीखा और जाना, वह पोती के बंद ज्ञान से नहीं बल्कि संघर्षपूर्ण जीवन की खुली किताब से अर्जित किया गया है। लोक ज्ञानी कबीर की कविता का स्वर इतना कठोर और पैना है तो इसलिए कि उसका जीवन-संघर्ष से भी उतना ही कठोर और पैना है।"8**

चौथीराम यादव के इस संदर्भ से यह भी ज्ञात होता है कि कबीर ना किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे और ना ही उनका अवतार हुआ था बल्कि दलित मुस्लिम समाज की जुलाहा जाति के नीरु और नीमा के ही पुत्र थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी लिखा है कि कबीर के पूर्वज तथा- कथित हिंदू दलित जाति के थे, जो

ब्राह्मणवादी जकरण से छुटकारा पाने के लिए मुस्लिम धर्म में रुपांतरित हो गए थे। कबीर ने स्वाभिमान के साथ स्वयं ही कहा है कि 'जाति जुलाहा नाम कबीर.....।' कबीर की शिक्षा पर चौथीराम यादव कहते हैं- **"कबीर का जो अनुभवजन्य ज्ञान है, सामाजिक अनुभव से प्राप्त यथार्थ ज्ञान है उसके सामने पोथी पंडित लाचार दिखाई देते हैं।"9** कबीर ने वही कहा जो उन्होंने भोगा, सहा और देखा। कबीर ना मिथकीय बातों में आया ना ही उन्होंने लोक को मिथकीय बातों उलझने दिया। वो हमेशा यथार्थ के साथ खड़ा रहा और जनता सच्चाई से वाकिफ करवाता रहा। इसी यथार्थ की बात है जो कबीर की जरूरत आज भी समाज में है। समाज में आज भी व्याप्त है भेदभाव, पाखंड, सांप्रदायिक माहौल, अधिकांश जनता आज भी मुक्त नहीं हो सका है। कबीर ने जिसके खिलाफ लड़ाई छेड़ी थी अभी चीज अभी भी समाज में व्याप्त ही है। वो लड़ाई जब तक पूरी तरह खत्म नहीं हो जाता है उस लड़ाई और चुनौती के खिलाफ लड़ना है। पुरोहितवाद और पूंजीवाद के गठजोड़ को ध्वस्त करने तक लड़ाई लड़ते रहना है।

कबीर का पूर्व वर्ती युग बतौर राहुल सांकृत्यायन सिद्ध सामंत युग था जिसमें आम आवाम का जीना दुर्भर हो गया था। हिन्दू तत्ववाद और मुस्लिम तत्ववाद का वर्चस्व आम आवाम पर हावी था। इसी के खिलाफ़ भक्ति आंदोलन जन विद्रोह के रुप में प्रस्फुटित हुआ था। कबीर इसी जन विद्रोह की अभिव्यक्ति के दुर्धास योद्धा थे। कबीर जैसे महान योद्धाओं के चलते ही भक्ति युग भक्ति आंदोलन के रूप में हिन्दी साहित्य के इतिहास में दर्ज है। सच पूछिए तो कबीर जैसे इंकलाबी योद्धा नहीं होते तो भक्ति युग का स्वरुप भक्ति आंदोलन का नहीं होता इस सन्दर्भ में गौर नरेश पीपा ने ठीक ही कहा है कि 'जो कलि नाम कबीर ना होते, लोक वेद और कलयुग मिलि करी भक्ति को रसातल देते। कबीर ने शस्त्र पुराण और वेद के बरक्स लोक की अग्नि धर्मी चेतना को अभिव्यक्त किया है। **"कबीर कोई चुका हुआ कवि नहीं है। वह तो इतिहास के हर मोड़ पर, परिवर्तन के हर बिंदु पर और जन-जागरण के हर अभियान में, हमारे साथ खड़ा है। अतः मध्यकालीन होते हुए भी यदि कबीर आधुनिक ही नहीं, हमारा समकालीन भी लगे तो क्या आश्चर्य!"10** आलोचक चौथीराम यादव ने अपने समय में कबीर के इसी काव्य विवेक को अपनी पुस्तक लोक और वेद आमने सामने में विसद व्याख्या की है तथा कबीर की क्रान्तिकारी विरासत को आगे बढ़ाया है।

निष्कर्ष : कबीर व्यक्ति से होकर आज एक विचारधारा है जिसे पुरोहितवाद, पूंजीवाद, साम्प्रदायिकता, पाखंड, अंधविश्वास, भेदभाव, छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए आवाज बुलंद करते हैं। कबीर का विद्रोही स्वर भक्तिकाल में असमानता के खिलाफ आवाज उठी थी ठीक वैसा ही विद्रोही स्वर की जरूरत आज भी है। चौथीराम यादव भी कबीर की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए कबीर की आवाज को बुलंद करते हैं। लोक जन की पूर्ण मुक्ति के लिए हमें कबीर और चौथीराम यादव के पास आने की बार बार जरूरत है।

संदर्भ सूची :

1. चौथीराम यादव, हजारी प्रसाद द्विवेदी समग्र पुनरावलोकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2012, पृष्ठ 150
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 57
3. चौथीराम यादव, हजारी प्रसाद द्विवेदी समग्र पुनरावलोकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2012, पृष्ठ 159
4. चौथीराम यादव, उत्तर शती के विमर्श और हाशिये का समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड, नई दिल्ली 2014,पृष्ठ 28
5. दिनेश कुशवाह
6. चौथीराम यादव, लोक और वेद आमने सामने,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड, नई दिल्ली 2018, पृष्ठ 94
7. कबीर, पद 163, पृष्ठ 247
8. चौथीराम यादव, उत्तर शती के विमर्श और हाशिये का समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड, नई दिल्ली 2014,पृष्ठ 68
9. चौथीराम यादव, लोक और वेद आमने सामने,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड, नई दिल्ली 2018,पृष्ठ 70
10. वही, पृष्ठ 94